Class 11th | Hindi

प्रारंभ BATCH

आरोह - भाग 1 (आधार) | पाठ - 1

नमक का दारोगा

[प्रेमचंद]

Complete Chapter Revision

प्रारंभ BATCH
Next Toppers

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

जीवन-परिचय

मूल नामः धनपत राय

जन्मः सन् 1880, लमही गाँव (उ.प्र.)

प्रमुख रचनाएँ: सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान (उपन्यास); सोजे वतन, मानसरोवर-आठ खंड में, गुप्त धन (कहानी संग्रह); कर्बला, संग्राम, प्रसंग (निबंध-संग्रह)

प्रेम की देवी (नाटक); कुछ विचार, विविध विचार, विविध प्रसंग (निबंध-संग्रह)

मृत्युः सन् 1936

प्रेमचंद

प्रेमचंद्र-युग

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

1.) वृद्ध मुंशी 2.) वंशीधर 3.) पं. — आलोपीदीन
पिताजी दारोगा ज़मींदार

पाठ का सार-

प्रस्तुत कहानी 'नमक का दारोगा' प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी है। कहानी में ही आए हुए एक मुहावरे को लें तो यह धन के ऊपर धर्म की जीत की कहानी है। कहानी में धन का प्रतिनिध्वि पंडित अलोपीदीन और धर्म का प्रतिनिधित्व मुंशी वंशीधर नामक पात्रों ने किया है। ईमानदार कर्मयोगी मुंशी वंशीधर को खरीदने में असफल रहने के बाद पंडित अलोपीदीन अपने धन की महिमा का उपयोग कर उन्हें नौकरी से निकलवा देते हैं, लेकिन अंत में सत्य के आगे उनका सिर झुक जाता है। वे सरकारी नौकरी से निकाले गए वंशीधर को बहुत ऊँचे वेतन और भत्ते के साथ अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त करते हैं और गहरे अपराध्-बोध् से भरी हुई वाणी में निवेदन करते हैं, कि 'परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह वंशीधर को सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरौवत, उद्दंड, किन्तु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे।

कहानी के इस अंतिम प्रसंग से पहले तक की समस्त घटनाएँ प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा उस भ्रष्टाचार की व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता को अत्यंत साहसिक तरीके से हमारे सामने उजागर करती हैं।

प्रारंभ BATCH

Next Toppers

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

अंग्रेजों ने नमक पर अपना एकाधिकार करने के लिए नमक का एक नया व अलग विभाग बना दिया था। जिससे नमक जैसी तुच्छ वस्तु भी लोगों को आसानी से मिलनी मुश्किल हो गई। इसी कारण कुछ लोग इसका चोरी छुपे व्यापार भी करने लगे जिसके कारण भ्रष्टाचार की जड़े खूब फैलने लगी। कोई रिश्वत देकर अपना काम करवाता तो , कोई चालाकी – होशियारी से। इस कारण अधिकारी वर्ग की कमाई तो अचानक कई गुना बढ़ गई थी।

इस विभाग में ऊपरी कमाई बहुत अधिक होती थी। इसीलिए अधिकतर लोग इस विभाग में काम करने के इच्छुक रहते थे। बड़े-बड़े पदों पर आसीन लोग भी नमक अधिकारी बनने को तत्पर रहते थे। लेखक कहते हैं कि उस दौर में लोग महत्वपूर्ण विषयों के बजाय प्रेम कहानियों व श्रृंगार रस के काव्यों को पढ़कर भी उच्च पदों में आसीन हो जाते थे।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

कहानी के नायक मुंशी वंशीधर भी इतिहास भूगोल की बातों से ज्यादा प्रेम कहानियों का अध्ययन कर नौकरी की खोज में निकल पड़े। उनके पिता को जीवन का कड़वा अनुभव था। इसीलिए कर्ज के बोझ तले डूबे पिता ने अपने घर की दुर्दशा और घर में जवान होती बेटियों का हवाला देकर वंशीधर से कहा कि पद प्रतिष्ठा के आधार पर नौकरी का चुनाव करने के बजाए ऐसी नौकरी का चुनाव करना जिसमें ऊपरी कमाई ज्यादा होती हो। ताकि घर के हालत कुछ सुधर सकें। वंशीधर के पिता का मानना था कि मासिक वेतन तो पूर्णमासी के चाँद की तरह होती है जो महीने के पहले दिन दिखाई देती है और धीरे-धीरे घटते-घटते अमावस्या तक खत्म हो जाती है।

लेकिन ऊपरी कमाई तो एक बहता स्रोत है जो हमेशा आदमी की प्यास बुझाता है यानी आदमी की जरूरतें पूरी करता है। वो साथ में यह भी कहते कि वेतन तो मनुष्य देता है। इसीलिए इसमें वृद्धि नहीं होती है। ऊपरी कमाई ईश्वर की देन है इसीलिए इसमें बरकत होती रहती हैं। उपदेश देने के साथ-साथ पिता ने आशीर्वाद भी दिया और आज्ञाकारी पुत्र की तरह वंशीधर ने पिता की बात सुनी और घर से नौकरी की तलाश में निकल पड़े। सौभाग्य से उन्हें नमक विभाग में दरोगा की नौकरी मिल गई जिसमें वेतन तो अच्छा था ही साथ में ऊपरी कमाई भी बहुत अधिक थी।

प्रारंभ BATCH

Next Toppers

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

मासिक आय - ?

जब यह बात उनके पिता को पता चली तो वो बहुत अधिक खुश हो गए। मुंशी वंशीधर ने सिर्फ छह महीने में ही अपनी कार्यकुशलता , ईमानदारी और अच्छे व्यवहार से सभी अधिकारियों को अपना प्रशंसक बना लिया था। सभी अधिकारी उन पर बहुत अधिक विश्वास करते थे।

ऊपरी कमाई -

नमक के दफ्तर से एक मील पूर्व की ओर जमुना नदी बहती थी। उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। जाड़े के दिन व रात का समय था। दरोगा जी बहुत गहरी नींद में सोए हुए थे कि अचानक उनकी आंख खुली और उन्हें नदी के पास गाड़ियों और नाव चलाने वाले लोगों की आवाजें सुनाई दी। दरोगा जी को संदेह हुआ कि इतनी रात में गाड़ियां नदी क्यों पार कर रही हैं। जरूर कुछ गड़बड़ हैं। यह सोचकर उन्होंने वर्दी पहनी और जेब में बंदूक रख , घोड़े में बैठकर पुल तक पहुंचे। वहां उन्होंने देखा कि गाड़ियों की एक लंबी कतार पुल पार कर रही थी। उन्होंने पास जाकर पूछा कि यह गाड़ियां किसकी है ? तो पता चला कि यह गाड़ियां पंडित अलोपीदीन की है। मुंशी वंशीधर यह सुनकर चौंक पड़े क्योंकि पंडित अलोपीदीन उस इलाके के एक प्रतिष्ठित मगर बहुत ही चालाक जमींदार थे। उनका व्यापार बहुत लम्बा-चौड़ा था। वो लोगों को धन कर्ज के रूप में देते थे।

प्रारंभ BATCH

Next Toppers

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

खैर वंशीधर ने जब गाड़ियों की जांच की तो पता चला कि गाड़ियों में नमक के बोरे भरे थे। उन्होंने गाड़ियां रोक ली। पंडित अलोपीदीन को जब एक व्यक्ति ने कहा कि उनकी गाड़ियों को दरोगा ने रोक लिया है तो उन पर इस बात का कुछ ख़ास असर नहीं पड़ा , क्योंकि उन्हें अपने धन के बल पर बहुत विश्वास था। वह कहते थे कि सिर्फ इस धरती पर ही नहीं बल्कि स्वर्ग में भी लक्ष्मीजी का ही राज चलता है और उनका यह कहना काफी हद तक सच भी था क्योंकि न्याय और नीति यह सब आज के समय में लक्ष्मी जी के खिलौने ही तो हैं। वह जिसको जैसे नचाना चाहती हैं उसको वैसा ही नचा देती है। उन्होंने उस व्यक्ति को गर्व से कहा कि तुम चलो हम आते हैं।

पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर से गाड़ियां को रोकने के बारे में पूछा तो वंशीधर ने कहा कि वो सरकार के हुक्म का पालन कर रहे हैं। पंडित अलोपीदीन ने अब दरोगा जी को अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से रिश्वत के जाल में फंसाने की कोशिश की। दरोगा जी को धन लालच देकर गाड़ी छोड़ने के बारे में बात की। परंतु वंशीधर ईमानदार व्यक्ति थे। उन्होंने पैसे लेने की बजाए पंडित जी को ही गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया। यह देखकर पंडित जी आश्चर्यचकित रह गए। और उन्होंने रिश्वत की रकम बढ़ा कर फिर से वंशीधर को लालच दिया। मगर वंशीधर ने उनके लालच के मायाजाल में न फंस कर सीधे ही उनको गिरफ्तार कर लिया। यानी धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

खबर चारों तरफ आग की तरह फैल गई। अगले दिन पंडित अलोपीदीन के हाथों में हथकड़ियां डालकर उन्हें अदालत में लाया गया। पंडित अलोपीदीन की गर्दन झुकी हुई थी और उनका हृदय शर्म व ग्लानि से भरा था। पंडितजी को कानून की गिरफ्त में देखकर वहां खड़े सभी लोग आश्चर्यचकित थे। खैर वकीलों व गवाहों की एक पूरी फौज खड़ी थी जो पंडितजी के पक्ष में बोलने को तैयार थी। अदालत में भी भरपूर पक्षपात हुआ और मुकद्दमा शुरू होते ही समाप्त हो गया। और पंडितजी को रिहा कर दिया गया लेकिन सत्यनिष्ठ और ईमानदार वंशीधर को अदालत ने भविष्य में सतर्क रहने की हिदायत दे दी।

पंडित अलोपीदीन अपने धन की शक्ति के बल पर पायी हुई जीत पर मुस्कुराते हुए वहां से बाहर निकले। और बेचारे वंशीधर लोगों के व्यंग बाण सुनते हुए। लगभग एक सप्ताह के अंदर ही वंशीधर को अपनी ईमानदारी का इनाम भी नौकरी से निकाले जाने के रूप में मिल गया यानी उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। हृदय में अथाह दुख लिए वो निराश मन से अपने घर की तरफ चल दिए। घर पहुंचकर पिता ने तो चार बातें सुनाई ही , पत्नी ने भी सीधे मुंह बात नहीं की। एक सप्ताह यूं ही गुजर गया।

प्रारंभ BATCH

Next Toppers

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

एक शाम वंशीधर के पिता आंगन में बैठे राम नाम का जाप कर रहे थे। तभी वहां पंडित अलोपीदीन पहुंच गए। वंशीधर के पिता ने पंडित अलोपीदीन को देखा और उनका स्वागत किया और उनसे चापलूसी भरी बातें करने लगे और साथ में उन्होंने अपने बेटे को भी जमकर कोसना शुरू कर दिया। लेकिन जब पंडित अलोपीदीन ने उन्हें बताया कि उन्होंने अपने जीवन में ऐसे कई अमीरों व उच्च अधिकारियों को देखा है जिन्हें आसानी से पैसे से खरीदा जा सकता हैं। मगर अपने कर्तव्य को इतनी ईमानदारी व सच्चाई के साथ निभाने वाले व्यक्ति को उन्होंने अपने जीवन में पहली बार देखा। जिसने अपने कर्तव्य व धर्म को धन से बड़ा माना।

वंशीधर ने जब पंडित जी को देखा तो उन्हें लगा कि शायद पंडित जी उसे खरी खोटी सुनाने आए होंगे लेकिन पंडित जी की बातें सुनकर उसका भ्रम दूर हुआ।खैर काफी देर बातें करने के बाद वंशीधर ने पंडित जी से कहा कि वह जो भी हुकुम देंगे , वो उसको मानने के लिए तैयार हैं। इस पर पंडित जी ने स्टांप लगा हुआ एक पत्र , इस प्रार्थना के साथ वंशीधर के हाथ में दिया कि वह उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर ले। वंशीधर ने जब उस पत्र को पढ़ा तो वह आश्चर्य चकित रह गया। दरअसल पंडित जी ने वंशीधर को अपनी सारी जायजाद का स्थाई मैनेजर नियुक्त किया था।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

यह देख वंशीधर की आंखों में आंसू आ गए और उन्होंने पंडित जी से कहा कि वह इस योग्य नहीं है। पंडित जी मुस्कुराते हुए बोले कि उन्हें अयोग्य आदमी ही चाहिए। वंशीधर बोला कि उसमें इतनी बुद्धि नहीं है कि वह इतनी बड़ी जिम्मेदारी को संभाल सके। पंडित जी ने कहा कि उन्हें विद्वान व्यक्ति नहीं बल्कि ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति की आवश्यकता हैं। वंशीधर ने कांपते हुए हाथों से उस पत्र पर दस्तखत कर दिए और पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर को खुशी से गले लगा लिया।

प्रारंभ BATCH

Next Toppers

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

01. अदालत में किसे दोषी ठहराया गया?

(क) पंडित अलोपीदीन को

(ख) वृद्ध मुंशी को

(ग) जमादार को

(घ) वंशीधर को

उत्तर- (घ) वंशीधर को

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

02. नमक विभाग में दारोगा के पद के लिए कौन ललचाते थे-

(क) डॉक्टर

(ख) शिक्षक

(ग) इंजीनियर

(घ) वकील

उत्तर- (घ) वकील

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

03. वृद्ध मुंशीजी के द्वार पर क्या आकर रूका?

(क) सजा हुआ रथ

(ख) सजी हुई गाड़ी

(ग) सजी हुई डोली

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (क) सजा हुआ रथ

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

04. वंशीधर ने अलोपीदीन को आते देख क्या किया?

(क) क्रोधित हो उठे|

(ख) सत्कार किया|

(ग) अनादर किया|

(घ) हँसने लगे|

उत्तर- (ख) सत्कार किया|

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

05. पंडित अलोपीदीन वंशीधर के लिए किस पद का प्रस्ताव लेकर आये थे?

(क) इंजीनीयर

(ख) जमींदार

(ग) मैनेजर

(घ) चपरासी

उत्तर- (ग) मैनेजर

प्रारंभ BATCH

Next Toppers

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

06. लेखराज ने किस प्रकार की रिश्वत दी?

(क) नकदी

(ख) सोना

(ग) जमीन

(घ) घर

उत्तर- (क) नकदी

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

07. वंशीधर ने लेखराज के साथ क्या किया?

(क) उसे गिरफ्तार किया

(ख) उसे जाने दिया

(ग) उससे माफी मांगी

(घ) उसे धन दिया

उत्तर- (क) उसे गिरफ्तार किया

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

08. कहानी 'नमक का दारोगा' का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(क) शिक्षा का प्रचार

(ख) ईमानदारी का महत्व

(ग) साहस का प्रदर्शन

(घ) समाज सुधार

उत्तर- (ख) ईमानदारी का महत्व

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

09. वंशीधर का फैसला क्या दर्शाता है?

(क) भ्रष्टाचार का अंत

(ख) न्याय का पालन

(ग) सत्ता का दुरुपयोग

(घ) कानून का उल्लंघन

उत्तर- (ख) न्याय का पालन

धर्म = जो धारण करने योग्य हो।

प्रारंभ BATCH

Next Toppers

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

10. वंशीधर ने लेखराज के प्रस्ताव को क्यों ठुकरा दिया?

(क) वह लालची नहीं था

(ख) वह ईमानदार था

(ग) वह डरा हुआ था

(घ) (वह गरीब था

उत्तर- (ख) वह ईमानदार था

प्रारंभ BATCH

Next Toppers

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

पाठ के आस-पास

01. दारोगा वंशीधर गैरकानूनी कार्यों की वजह से पंडित अलोपीदीन को गिरफ्तार करता है, लेकिन कहानी के अंत में इसी पंडित अलोपीदीन की सहृदयता पर मुग्ध होकर उसके यहाँ मैनेजर की नौकरी को तैयार हो जाता है। आपके विचार से वंशीधर का ऐसा करना उचित था? आप उसकी जगह होते तो क्या करते?

उत्तर- वंशीधर ईमानदार व सत्यनिष्ठ व्यक्ति था। दारोगा के पद पर रहते हुए उसने पद के साथ नमकहलाली की तथा उस पद की गरिमा को ध्यान में रखते हुए ईमानदारी, सतर्कता से कार्य किया। उसने भारी रिश्वत को ठुकरा कर पंडित अलोपीदीन जैसे प्रभावी व्यक्ति को गिरफ्तार किया। उसने गैरकानूनी कार्य को रोका।
उसी अलोपीदीन ने जब उसे अपनी जायदाद का मैनेजर बनाया तो वह उसकी नौकरी करने के लिए तैयार हो गया। वह पद के प्रति कर्तव्यनिष्ठ था। उसकी जगह हम भी वही करते जो वंशीधर ने किया।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

02. नमक विभाग के दारोगा पद के लिए बड़ों-बड़ों का जी ललचाता था। वर्तमान समाज में ऐसा कौन-सा पद होगा जिसे पाने के लिए लोग लालायित रहते होंगे और क्यों?

उत्तर- वर्तमान समाज में भ्रष्टाचार के लिए तो सभी विभाग हैं। यदि आप भ्रष्ट हैं तो हर विभाग में रिश्वत ले सकते हैं। आज भी पुलिस विभाग सर्वाधिक बदनाम है, क्योंकि वहाँ सभी लोगों से रिश्वत ली जाती है। न्याय व रक्षा के नाम पर भरपूर लूट होती है।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

03. अपने अनुभवों के आधार पर बताइए कि जब आपके तर्कों ने आपके भ्रम को पुष्ट किया हो।

उत्तर- ऐसा जीवन में अनेक बार हुआ है। अभी पिछले दिनों हिंदी अध्यापिका ने कहा कि 'कल आप लोग कॉपी किताब लेकर मत आना' यह सुनकर मैंने सोचा ऐसा तो कभी हो नहीं सकता कि हिंदी की अध्यापिका न पढ़ाएँ। कहीं ऐसा तो नहीं कि कल अचानक परीक्षा लें ? और वही हुआ। कॉपी किताब के अभाव में हमारा टेस्ट लिया गया। मुझे जिस बात का भ्रम था, वही पुष्ट हो गया।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

03. पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। वृद्ध मुंशी जी द्वारा यह बात एक विशिष्ट संदर्भ में कही गई थी। अपने निजी अनुभवों के आधार पर बताइए –

(क) जब आपको पढ़ना-लिखना व्यर्थ लगा हो।

(ख) जब आपको पढ़ना-लिखना सार्थक लगा हो।

(ग) "पढ़ना-लिखना' को किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया होगाः साक्षरता अथवा शिक्षा? क्या आप इन दोनों को समान मानते हैं?

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

उत्तर-

(क) कबीर की साखियाँ और सबद पढ़ते समय जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि कबीर किसी पाठशाला में नहीं गए तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसा ज्ञानी संत बिना पढ़ा था तो हम ने पढ़कर क्या लाभ उठाया? जब अंत में ईश्वर से संबंध ही जीवन का उद्देश्य है तो पढ़ना लिखना क्या? दूसरी बात यह कि जब भारत का खली नामक भीमकाय रैसलर विश्व चैंपियन बना तभी मुझे पता लगा कि वह बिलकुल पढ़ा-लिखा नहीं है। यह सुनकर लगा कि बिना पढ़े भी धन और ख्याति प्राप्त किए जा सकते हैं।

(ख) मेरे पड़ोस में एक अम्मा जी रहती हैं। उनके दोनों बेटे विदेश में रहते हैं। उनकी चिट्ठी, ई-मेल आदि सब अम्मा जी के लिए हम पढ़कर सुनाते हैं तो हमें लगता है कि हमारा पढ़ा-लिखा होना सार्थक है।

(ग) यहाँ पढ़ना-लिखना को शिक्षा देने के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है।

प्रारंभ BATCH

Next Toppers

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

04. पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। वृद्ध मुंशी जी द्वारा यह बात एक विशिष्ट संदर्भ में कही गई थी। अपने निजी अनुभवों के आधार पर बताइए-
शिष्ट संदर्भ

(क) जब आपको पढ़ना-लिखना व्यर्थ लगा हो।

(ख) जब आपको पढ़ना-लिखना सार्थक लगा हो।

(ग) 'पढ़ना-लिखना' को किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया होगा : साक्षरता अथवा शिक्षा? (क्या आप इन दोनों को समान मानते हैं?)

उत्तर- पढ़ना-लिखना –

- साक्षरता-जिसे अक्षर ज्ञान हो।
- शिक्षा-जो शिक्षित हो।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

05. 'लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं।' वाक्य समाज में लड़कियों की स्थिति की किस वास्तविकता को प्रकट करता है?

उत्तर- यह वाक्य समाज में लड़कियों की हीन दशा को व्यक्त करता है। लड़कियों के युवा होते ही माता-पिता को उनके विवाह आदि की चिंता सताने लगती है। विवाह के लिए दहेज इकट्ठा करना पड़ता है। इनसे परिवार को कोई आर्थिक लाभ नहीं होता।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

06. इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करनेवाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था।-अपने आस-पास अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को देखकर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? उपर्युक्त टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए लिखें।

उत्तर- वर्तमान समाज में किसी राजनेता को सजा हो हमें आश्चर्य होगा, क्योंकि ये लोग भ्रष्ट तो हैं ही यह तो समस्त जनता जानती है, पर इन्हें सजा होना हैरत की बात होगी।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

समझाइए तो ज़रा

01. नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए।

उत्तर- इसका अर्थ है कि पद ऊँचा हो यह जरूरी नहीं है, लेकिन जहाँ ऊपरी आय अधिक हो उसे स्वीकार कर लेना। इसका मतलब मान से भी ज्यादा धन कमाने का प्रयत्न करना।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

02. इस विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुधि अपनी पथ-प्रदर्शक और आत्मावलंबन ही अपना सहायक था।

उत्तर- वंशीधर को अपने सद्गुणों जैसे धीरज, बुधि और आत्मविश्वास पर ही भरोसा था। वे सत्य की राह पर अपने बूते पर चलने वाले युवक थे।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

03. तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया।

उत्तर- वंशीधर की बुद्धि ने गाड़ियों के लिए जो वजह सोची वही सही निकली थी। इतनी रात गए गाड़ियाँ चोरी का माल लेकर नदी पर जाती थीं।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

04. न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं।

उत्तर- संसार में धन के बल पर न्यायालय में न्याय को अपने पक्ष में खरीदा जा सकता है। नैतिकता को धन के पैरों तले कुचला जा सकता है। ऐसी अलोपीदीन की पुष्ट धारणा थी।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

05. दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी।

उत्तर- कुछ समाचार दिन-रात, तार-बेतार के ऐसे ही फैल जाती है। खासतौर पर वे बातें जिनमें किसी की निंदा का आनंद मिल रहा हो तो बड़ी शीघ्रता से फैल जाती है।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

06. खेद ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।

उत्तर- वंशीधर के पिता ने नौकरी गवाँकर रिश्वत ठुकराकर लौटे बेटे की बुद्धि को कोसते हुए दुख प्रकट किया। उन्होंने जो भी सीख बेटे को दी थी उसे बेटे ने नहीं माना था। इस पर वे दुखी थे।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

07. धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।

उत्तर- धर्म ऐसा अडिग खड़ा रहा कि धन का हर वार बेकार गया और अंत में धनी अलोपीदीन को गिरफ्तार होना पड़ा। यह उसके लिए पैरों तले कुचले जाने के बराबर था।

नमक का दारोगा

Complete Chapter Revision

08. न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।

उत्तर- न्यायोचित बात का निर्णय होना था और यहाँ धर्म थे वंशीधर और धन थे अलोपीदीन, दोनों की हार-जीत का फैसला न्याय के मैदान में होना था।

STAY CONNECTED

KEEP LEARNING

Thank You

Join our telegram channel
@NEXTTOPPERS_HUMANITIES